4D9NF5

पाठ 24

बालसभा

विद्यालयों में पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ खेल–कूद, व्यायाम और बालसभा जैसे मनोरंजक कार्यक्रम भी आयोजित होते रहते हैं। बालसभा के द्वारा जहाँ बच्चों का मनोरंजन होता है, वहीं उन्हें अपनी कला और क्रियाकलापों को प्रकट करने का सुनहरा अवसर भी मिलता है। आमतौर पर बालसभा का आयोजन सप्ताह में एक बार शनिवार को किया जाता है। ऐसे ही एक आयोजन का वर्णन इस पाठ में पढ़ो।

आज शनिवार है। हमारे विद्यालय में शनिवार को खूब मज़ा आता है। इस दिन दोपहर की छुट्टी के बाद बालसभा होती है। बालसभा में बच्चे गीत, कहानियाँ, पहेलियाँ, चुटकुले, गप्प, पशु–पक्षियों की बोलियाँ सुनाते हैं। दो घंटे तक बालसभा में खूब हा–हा, ही–ही होती रहती है।

आज भी बच्चों में काफी उत्साह है। वे घर से ही सुनाने का मसाला तैयार करके आए हैं। कोई अपने साथी को वह चुटकुला सुना रहा है, जो वह बाल–सभा में सुनाएगा। कोई अपनी सहेली को गीत गुनगुनाकर सुना रही है। तभी घंटी बजी और सारे बच्चे अपनी–अपनी कक्षाओं से निकलकर हॉल में आ बैठे। थोड़ी देर में बड़ी बहिन जी आईं और उन्होंने उषा से कहा– ''उषा, जो बच्चे कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं, उनके नाम लिख लो।''

अब तो उषा के पास बच्चों की भीड़ लग गई। उषा ने सबके नाम लिखे। नाम के आगे यह भी लिखा कि वे क्या सुनाएँगे या सुनाएँगी।

थोड़ी देर में बाल–सभा शुरू हुई। बड़ी बहिन जी तथा अन्य शिक्षकगण ऊपर मंच पर बैठे थे। उषा एक–एक बच्चे का नाम लेकर पुकार रही थी। उसने कहा – ''सबसे पहले रवि अपनी छोटी–सी कविता सुनाएगा''। रवि ने अपनी कविता सुनाई।

घंटा, बोला, चलो मदरसे

निकलो–निकलो–निकलो घर से

घंटा बोला, चलो मदरसे

जल्दी निकलो अपने घर से
कपड़े पहनो, बस्ता ले लो
जल्दी निकलो अपने घर से।
जो तुम देर करोगे भइया
तो फिर होगी धम्मक–धइया।

कविता सुनकर सबने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने संगीता को पहेलियाँ सुनाने के लिए बुलाया। संगीता ने तीन पहेलियाँ बूझीं। पहले उसने यह पहेली सुनाई–

'' प्रथम कटे तो करती तंग,
तरह–तरह के मेरे रंग।
तीन अक्षर का मेरा नाम
आसमान में लड़ती जंग।।''

रमेश ने ज़ोर से चिल्लाकर इसका उत्तर बताया, 'पतंग'।

संगीता ने कहा सही, फिर उसने दूसरी पहेली सुनाई–

मेरी नानी कोयला खाती
मैं खाती हूँ बिजली।
मम्मी मेरी डीज़ल पीती
यही कहानी पिछली।।

अब की बारी बच्चों से कोई जवाब नहीं आया।

संगीता ने इस पहेली का उत्तर बताया, ''रेल का इंजन।''

तीसरी पहेली थी–

गाना गाकर मारे तीर।

संगीता ने पहेली का उत्तर पूछा।

किसी ने कहा 'रेडियो', किसी ने कहा 'हवा'; अंत में सही उत्तर सोनाली ने दिया, 'मच्छर'। सभी ने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने मन्नू को चुटकुला सुनाने के लिए बुलाया।

मन्नू ने एक मज़ेदार चुटकुला सुनाया।

दीपू – पिता जी, आपने एक सप्ताह पहले जो गुलाब की कलम लगाई थी उसमें अभी तक जड़ें नहीं निकली हैं।

पिता जी – तुम्हें कैसे पता?

दीपू – क्योंकि मैं उसे रोज़ उखाड़कर देखता हूँ।

अब किशुन की बारी थी।

किशुन ने चुटकुला सुनाया– तीन गप्पी गप्प सुना रहे थे।

पहले ने कहा– ''मेरे दादा जी ने पानी में डुबकी लगाई तो पंद्रह मिनट के बाद ऊपर आए।''

दूसरे ने कहा– ''ये तो कुछ भी नहीं, मेरे दादा जी ने नदी के पानी में डुबकी लगाई तो एक घंटे के बाद ऊपर आए।''

तीसरे ने कहा– ''अरे, मेरे दादा जी ने पिछले बरस नदी में डुबकी लगाई तो आज तक ऊपर नहीं आए।''

चुटकुला सुनकर सभी बच्चें हो–हो कर हँस पड़े और उन्होंने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने शिवानी को गप्प पर आधारित समाचार सुनाने के लिए बुलाया।

शिवानी ने समाचार सुनाया–

''कल रात राजधानी में ओलों की जबर्दस्त बारिश हुई। सरकार ने सभी गंजों को घर में रहने की हिदायत दी।''

''सरगुजा क्षेत्र में हाथियों के बढ़ते आतंक को देखते हुए सरकार ने चार मच्छरों को वहाँ भेजा है। जैसे ही गड़बड़ी फैलानेवाले हाथी नज़र आएँगे, ये मच्छर उन्हें उठाकर मैत्रीबाग के चिड़ियाघर में ले आएँगे।''

''छत्तीसगढ़ में तीन ठग गिरफ्तार किए गए हैं। पता चला है कि इन ठगों ने किसी व्यक्ति को सस्ते दामों में आगरे का ताजमहल बेच दिया था।''

गप्प समाचार सुनकर सब बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े।

बालसभा का समय समाप्त हो गया था। बड़ी बहिन जी ने कहा,'' सब बच्चों ने अच्छे–अच्छे चुटकुले, पहेलियाँ, गप्प सुनाईं। सबको बहुत–बहुत बधाई। अगले शनिवार को फिर बालसभा होगी। बच्चे अच्छी तैयारी करके आएँ।

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को प्रेरित करें कि इसी तरह की पहेलियाँ एकत्रित करके कक्षा में आपस में एक–दूसरे से बूझें।
- अन्य चुटकुले सुनाएँ व बालकों से सुनें।
- छोटी–छोटी कविता का वाचन करें व बच्चों से भी सुनें।
- अधूरी कविता पूरी करवाएँ।

4DIJGS